प्र०- ऐतिहासिक आलोचना का स्वरूप बताते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी के आलोचक रूप को स्पष्ट करें?

उ०- (1) ऐतिहासिक आलोचना प्रणाली वह आलोचना प्रणाली है, जिसमें किसी कृति का मूल्यांकन उसकी ऐतिहासिकता के आधार पर किया जाता है। इस आलोचना पद्धति में समकालीन या पूर्ववर्ती इतिहास का आश्रय लिया जाता है।

(2) इसके अंतर्गत वे आलोचनाएं आती हैं, जिनमें किसी रचना का मूल्यांकन रचनाकार की जाति, वर्ग और उसके समाज के आधार पर किया जाता है। इस आलोचना पद्धति का आरंभ प्रसिद्ध इतिहासकार टेन ने किया था। हिन्दी आलोचना को अमूल्य निधि है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर और नाथ पंथियों का मूल्यांकन इसी आलोचना पद्धति से किया है।

(3) ऐतिहासिक आलोचना में साहित्यकार के युग, उसकी परिस्थितियाँ और परिवेश का [illegible] प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें आलोचक परिस्थिति जन्य प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में ही आलोच्य वस्तु को कसौटी पर कसता है। परन्तु यह आलोचना पद्धति केवल परिस्थितियों पर ही केन्द्रित होने के कारण एकपक्षीय है और इसमें पूर्णता का अभाव है।

फरवरी

03

शुक्रवार

P-2

फरवरी 2017

| सो. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | र. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | | | | | |

(4) हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक आलोचना को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है —

1) साहित्य के इतिहास ग्रंथ के रूप में किये गए व्यापक प्रयास

2) विभिन्न युगों, काव्य परम्पराओं एवं प्रवृत्तियों के अध्ययन रूप में किये गए प्रयास

3) साहित्य की विभिन्न विधाओं एवं रूपों के विकास से सम्बन्धित प्रयास।

(5) स्वतंत्र ऐतिहासिक ग्रंथों के आलोचक रूप में प्रमुख आलोचक और उनके ग्रंथ निम्नलिखित हैं —

आलोचक — ग्रंथ

(1) डॉ० श्यामसुन्दर दास — हिन्दी भाषा और साहित्य

(2) अयोध्यासिंह उपाध्याय — हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास

(3) डॉ० रमाशंकर 'रसाल' — हिन्दी साहित्य का इतिहास

P-3

फरवरी 2017

| सो. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | र. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | | | | | |

फरवरी

04

शनिवार

(4) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी — 1) हिन्दी साहित्य की भूमिका
2) हिन्दी साहित्य का आदिकाल
3) हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास

(5) गणपतिचन्द्र गुप्त — हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास

(6) डॉ० रामकुमार वर्मा → हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

(6) हिन्दी के अनेक शोध-कर्ताओं ने शोध-प्रबन्ध के रूप में विभिन्न युगों की परम्पराओं एवं प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए ऐतिहासिक समालोचना का विकास किया है, जिनमें से प्रमुख हैं —

आलोचक — ग्रंथ

1) डॉ० दीनदयालु गुप्त — अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय

2) परशुराम चतुर्वेदी
3) डॉ० भोलानाथ तिवारी
4) डॉ० बच्चन सिंह
} उत्तर मध्यकालीन काव्य

माघ शुक्ल 8
रात्रि 7.28 तक

सूर्योदय – 6.32
सूर्यास्त – 5.28

शक सम्वत् – 1938
विक्रम सम्वत् – 2073

फरवरी

05

रविवार

(7) साहित्य के विभिन्न विधाओं एवं काव्य-रूपों का ऐतिहासिक समीक्षा प्रस्तुत करने वाले विद्वानों में डॉ० शम्भुनाथ सिंह, शिवमंगल सिंह, ~~[illegible]~~

फरवरी
06
सोमवार

फरवरी 2017

| सो. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | र. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | | | | | |

P-4

(8) ऐतिहासिक आलोचना में अनेक आलोचकों के काल विभाजन, परम्पराओं का वर्गीकरण, उनके उद्गम-स्रोतों की खोज, उनकी प्रवृत्तियों की व्याख्या आदि की दृष्टि से इसमें पूर्ववर्ती इतिहासकारों की अनेक भ्रान्तियों का निराकरण करते हुए वैज्ञानिक नये निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

(9) ऐतिहासिक आलोचना की दिशा में डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त का प्रयास सराहनीय है। उन्होंने इतिहास ग्रंथ का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन करते हुए विश्व साहित्य के इतिहास लेखन परम्परा में एक नया योगदान दिया। इसमें लेखक ने इतिहास-लेखन के सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए साहित्य के विकासवाद का एक मौलिक सिद्धान्त स्थापित किया।

माघ शुक्ल 10
दिन 2.45 तक

सूर्योदय – 6.31
सूर्यास्त – 5.29

शक सम्वत् – 1938
विक्रम सम्वत् – 2073